(१) सन्तोंकी निन्दा श्रीनामके निकट भीषण अपराधका विस्तार करती है, जिन नाम-परायण सन्त-महात्माओंके द्वारा श्रीकृष्ण नामकी महिमाका संसारमें प्रचार होता है, उनकी निन्दाको श्रीनाम प्रभु कैसे सह सकते हैं? अतः साधु-सन्तोंकी निन्दा करना पहला अपराध है।

(२) इस संसारमें जो मनुष्य बुद्धि द्वारा परम मङ्गलमय श्रीविष्णुके नाम, रूप, गुण और लीला आदिमें भेद दर्शन करते हैं, अर्थात् भौतिक पदार्थों की तरह श्रीविष्णुके नाम, रूप, गुण और लीलाको नामी-विष्णुसे स्वतन्त्र अथवा विष्णुसे पृथक् मानते हैं अथवा शिव आदि देवताओंको विष्णुसे स्वतन्त्र अथवा विष्णुके समान मानते हैं, उनका वह हरिनाम (नामापराध) निश्चय ही अहितकर है।

(३) नामतत्त्वविद् गुरुको मरणशील और पञ्चभौतिक शरीरयुक्त साधारण मनुष्य मानकर उनकी अवज्ञा करना।

(४) वेद और सात्त्वत पुराण आदि शास्त्रोंकी निन्दा करना। सभी वेदों और उपनिषदोंमें नामकी महिमा पायी जाती है। जिन मन्त्रों में नामकी महिमा प्रकाशित है, उनकी निन्दा करनेसे नामापराध होता है। कुछ लोग दुर्भाग्यवश श्रुतिके दूसरे उपदेशोंका सम्मान अधिक करते हैं तथा नाम-महिमा सूचक श्रुति-मन्त्रोंकी उपेक्षा करते हैं। ऐसा करना भी नामापराध है।

(५) हरिनामकी महिमाको अतिस्तुति समझना। शास्त्रोंमें ऐसा कहा गया है कि भगवन्नाममें भगवानकी सारी शक्तियाँ निहित हैं, नाम पूर्ण चिन्मय है, अतएव वे मायिक जगतके बन्धनको ध्वंस करनेमें समर्थ हैं। ये सब नाम माहात्म्य परम सत्य हैं, किन्तु जो इनपर विश्वास नहीं करते और कहते हैं

शास्त्रमें नामकी महिमा बढ़ा-चढ़ा कर कही गई है, उन व्यक्तियोंका कभी संग भी न करो। यदि वे कभी आँखोंके सामने पड़ जायें तो समस्त कपड़ोंके साथ स्नानकर लेना-यही श्रीचैतन्य महाप्रभुकी शिक्षा है।

(६) भगवन्नामको काल्पनिक समझना अपराध है। मायावादी और भौतिक कर्मवादी निर्विकार और नाम-रूपरहित ब्रह्मको परमतत्त्व मानते हैं। जो ऐसा मानते हैं कि ऋषियोंने अपने कार्योंकी सिद्धिके लिए राम-कृष्ण आदि नामोंकी कल्पना की है-वे नामापराधी हैं। हरिनाम काल्पनिक नहीं, वरन् नित्य और चिन्मय वस्तु हैं-भक्तिके द्वारा चिद् इन्द्रियोंपर आविर्भूत मात्र होते हैं। सद्गुरु और शास्त्र यही शिक्षा देते हैं। अतः हरिनामको परम सत्य मानना चाहिए; उन्हें कल्पित समझनेसे कभी भी नामकी कृपा नहीं पायी जा सकती।

(७) जिनकी श्रीनामके बलपर पाप-कर्मोंमें प्रवृत्ति होती है, उनकी अनेक यम, नियम, ध्यान, धारणा आदि कृत्रिम योग-प्रक्रियाओंके द्वारा भी शुद्धि नहीं होती, यह निश्चित है।

(८) धर्म, व्रत, त्याग, होम, आदि प्राकृत शुद्ध कर्मोंको अप्राकृत भगवन्नामके समान या तुल्य समझना भी प्रमाद या असावधानी है।

(९) श्रद्धाहीन और नाम-श्रवण करनेसे विमुख मनुष्यको नामका उपदेश देना भी नामापराध है।

(१०) नामकी अद्भुत महिमाको सुनकर भी जो शरीरमें 'मैं' और सांसारिक भोग्य पदार्थों में 'मेरा' की बुद्धि रखते हैं तथा श्रीनामोच्चारणमें प्रीति या आग्रह नहीं दिखलाते, वे भी नामापराधी हैं।